# भारत अपने आचरण से पेश कर रहा मिसाल

**प्रधानमंत्री का इशारा यूक्रेन पर रूसी हमले के बाद पिछले करीब सवा महीने से दोनों देशों के बीच जारी युद्ध की ओर था। निश्चित रूप से युद्ध से उपजे हालात ने जहां कई तरह की परेशानियां पैदा की हैं वहीं बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका को और महत्वपूर्ण बना दिया है।**

अमन सिंह।।

बिम्सटेक यानी बे ऑफ बंगाल इनीशिएटिव फॉर मल्टि सेक्टरल टेक्निकल एंड इकॉनमिक को–ऑपरेशन की पांचवीं शिखर बैठक को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ठीक ही कहा कि यूरोप की हालिया घटनाओं ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की स्थिरता पर सवाल खड़ा कर दिया है। प्रधानमंत्री का इशारा यूक्रेन पर रूसी हमले के बाद पिछले करीब सवा महीने से दोनों देशों के बीच जारी युद्ध की ओर था। निश्चित रूप से युद्ध से उपजे हालात ने जहां कई तरह की परेशानियां पैदा की हैं वहीं बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका को और महत्वपूर्ण बना दिया है। ऐसे में प्रधानमंत्री का यह आह्वान और सामयिक हो जाता है कि बिम्सटेक देश मिलकर बंगाल की खाड़ी को सुरक्षा, समृद्धि और जुड़ाव के पुल में बदल दें। यहां यह रेखांकित करना गलत नहीं होगा कि इस क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग के जरिए शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने की राह पर भारत अपने आचरण से मिसाल पेश करते हुए चल रहा है। इसी शिखर बैठक की मेजबानी कर रहे देश श्रीलंका को लें तो जबर्दस्त वित्तीय संकट से जूझते इस पड़ोसी देश की ओर भारत ने जिस तरह से मदद का हाथ बढ़ाया है, वह अन्य पड़ोसी देशों के लिए भी आश्वस्तिकारक हो सकता है।

बहरहाल, भारत इस क्षेत्रीय मंच को मजबूती देने के अन्य उपायों में भी उतनी ही दिलचस्पी ले रहा है। उसने बिम्सटेक सेक्रेटेरिएट के लिए 10 लाख डॉलर देने की घोषणा की है। इसके अलावा बिम्सटेक सेंटर फॉर वेदर एंड क्लाइमेट का काम शुरू करने के लिए भी 30 लाख डॉलर देने को तैयार है। हालांकि यह कोई नया संगठन नहीं है। यह 1997 से ही अस्तित्व में है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों के वैश्विक तथा क्षेत्रीय घटनाक्रम ने इस मंच को नई सार्थकता प्रदान की है। एशिया–प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ी हुई आक्रामकता इस क्षेत्र के सभी देशों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रही है। ऐसे में सार्क जैसा मंच पंगु बना हुआ है।

पाकिस्तान का अदूरदर्शी और अड़ियल रवैया उसकी एक बड़ी वजह है। अफगानिस्तान की हालत सर्वविदित है। ध्यान रहे बिम्सटेक के सदस्य देशों में भारत, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार और थाइलैंड हैं। यानी पाकिस्तान अफगानिस्तान और मालदीव को छोड़ दें तो सार्क के सभी देश इसके भी सदस्य हैं। दुनिया की 21.7 फीसदी आबादी बिम्सटेक की जद में आती है। इन देशों का संयुक्त जीडीपी 3.8 ट्रिलियन डॉलर है। साफ है कि यह मंच न केवल पूरे क्षेत्र में शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिहाज से बल्कि आपसी व्यापार के जरिए समृद्धि का नया दौर लाने की दृष्टि से भी अहम साबित हो सकता है।

शर्त सिर्फ यह है कि इनमें से कोई देश क्षेत्रीय मंच को निष्प्रभावी बनाने की वैश्विक या महाशक्तीय साजिशों का मोहरा न बने। इस क्षेत्र का सबसे बड़ा देश होने के नाते भारत के कूटनीतिक कौशल की एक परीक्षा यह भी होगी कि इन सभी देशों के बीच संवाद की निरंतरता बनाए रखते हुए इन्हें विश्वास के धागे से बांधे रखा जाए।

## धर्म का चुनाव

धर्म-दर्शन

**अशोक वोहरा।** धर्मशास्त्रियों का मत है कि शास्त्र में इस बारे में कुछ नहीं कहा गया है। इसलिए न इसे शास्त्र सम्मत कहा जा सकता है और न शास्त्र के विरूद्ध। लेकिन वे मानते हैं कि धर्म का चुनाव किसी भी व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है, इसमें किसी तरह का दबाव नहीं होना चाहिए। अलग–अलग धर्मशास्त्रियों ने अमर उजाला से कहा कि प्रलोभन देकर या लालच के द्वारा हिंदू बनाया जाना गलत है। धर्म परिवर्तन को लेकर शास्त्रों में क्या कहा गया है? हिंदू धर्म का सबसे पवित्र ग्रंथ श्गीताश् जिसे भगवान श्रीकृष्ण के मुख से उत्पन्न हुआ माना जाता है उसमें कहा गया है कि जिसमें श्रद्धा और भक्ति नहीं हो और जो इस गीताशास्त्र में रुचि नहीं रखता हो उसे गीता का उपदेश नहीं देना चाहिए।

## संपादकीय

### अविश्वास की छाया

31 अक्टूबर 1984 को इंदिरा गांधी की उनके ही सुरक्षाकर्मियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। इससे समूचे देश में सांप्रदायिक तनाव पैदा हो गया। जगह–जगह सिख विरोधी दंगे भड़कने लगे। राजीव गांधी तब बंगाल के दौरे पर थे। उन्होंने दिल्ली आने का फैसला किया। उनके साथ वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी भी थे। वह कैबिनेट में दूसरे स्थान पर आसीन थे। ऐसे अवसरों पर एक सीनियर मिनिस्टर को कुछ समय के लिए कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनाने का रिवाज रहा है। पंडित नेहरू और शास्त्री जी की मृत्यु के बाद गुलजारी लाल नंदा कार्यवाहक प्रधानमंत्री बने थे। लेकिन राजीव गांधी के आस–पास की चौकड़ी तमाम मर्यादाओं को ध्वस्त करने में लगी थी। राष्ट्रपति जैल सिंह उस समय ओमान दौरे पर थे। अरुण नेहरू वाली चौकड़ी को भय था कि ज्ञानीजी राजीव गांधी के बजाय प्रणब या किसी अन्य को कार्यवाहक प्रधानमंत्री की शपथ दिला सकते हैं। उस समय उपराष्ट्रपति पद पर वेंकट रमण विराजमान थे। इसी के तहत उपराष्ट्रपति के हाथों शपथ दिलाने का प्लान भी तैयार किया गया। प्रणब मुखर्जी ने अपनी आत्मकथा में इसका उल्लेख भी किया है कि किस तरह अविश्वास के चलते बाद में उन्हें कांग्रेस से बाहर का रास्ता दिखाया गया। ज्ञानी जैल सिंह जब इंदिरा गांधी के अंतिम दर्शन करने से लौट रहे थे कि अचानक कांग्रेसी पार्षद अर्जुन दास ने राष्ट्रपति की गाड़ी रोककर नारेबाजी की और मिनटों में राजधानी सिख विरोधी दंगे की नगरी बन गई। कैबिनेट के कई सदस्य उन पर महाभियोग चलाने का माहौल बनाने लगे थे। केके तिवारी तब केंद्र में राज्यमंत्री हुआ करते थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन को आतंकवादियों की शरणस्थली करार दे दिया। राजीव सरकार ने एक अवसर पर पोस्टल संशोधन बिल स्वीकृति हेतु भेजा, जिसे जैल सिंह ने लंबे समय तक अपने पास रोके रखा।

**जैल सिंह ने माना कि इससे देश बड़े नरसंहार से बच गया। राजीव को शपथ दिलाने की वजह से उस वक्त जो दंगे शुरू हुए थे, उन पर काबू पाया जा सका।**

# भिंडरवाले से बढ़ी नजदीकी

केसी त्यागी।।

ज्ञानी जैल सिंह राष्ट्रपति पद से रिटायर होकर चाणक्यपुरी के पास स्थित सर्कुलर रोड में रहने लगे थे। उसी दौर में 1987 में देवीलाल हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। सीएम बनने के बाद वह जैल सिंह से मिलने उनके आवास पहुंचे। मैं भी इस मुलाकात का साक्षी रहा हूं। देवीलाल और जैल सिंह पहले संयुक्त पंजाब में कांग्रेस पार्टी में बड़े पद पर रह चुके थे। प्रताप सिंह कैरों के विरुद्ध चली मुहिमों में दोनों साझीदार भी रह चुके थे। खैर, जैल सिंह से मुलाकात में देवीलाल ने उनसे तंज भरे अंदाज में एक सवाल पूछा। उन्होंने पूछा– संसदीय दल की बैठक के सर्वसम्मत प्रस्ताव के बगैर आपने राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद की शपथ क्यों दिलाई? जैल सिंह के पास इसका कोई तार्किक उत्तर नहीं था। उनका फैसला भावनाओं पर केंद्रित था। जैल सिंह ने माना कि इससे देश बड़े नरसंहार से बच गया। राजीव को शपथ दिलाने की वजह से उस वक्त जो दंगे शुरू हुए थे, उन पर काबू पाया जा सका। फिर भी संवैधानिक मान्यताओं को दरकिनार करने की जो तोहमत जैल सिंह पर लगी, उसने उनका पीछा नहीं छोड़ा। वैसे, उनकी शैक्षणिक योग्यता अधिक नहीं थी, लेकिन उन्होंने धार्मिक ग्रंथों की पढ़ाई की थी। इसलिए उन्हें ज्ञानी की पदवी मिली। फरीदकोट रियासत

में स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करने का श्रेय भी उन्हें जाता है। वह तो आजादी के बाद भी जेल में बंद थे। इत्तफाक से सरदार पटेल वहां एक कार्यक्रम में शामिल होने गए तो उन्हें जैल सिंह का स्मरण आया। सरदार तब जेल में जाकर उनसे मिले। यहीं से उनकी रिहाई की प्रक्रिया आसान हो गई। 1972 में इंदिरा गांधी का विश्वासपात्र होने के नाते जैल सिंह मुख्यमंत्री बने। इसी दौरान क्रांतिकारी उधम सिंह के अवशेष लंदन से भारत लाकर उन्होंने काफी लोकप्रियता कमाई। वहीं, 1980 में प्रकाश सिंह बादल की मुख्यमंत्री पद से बर्खास्तगी को पंजाब की जनता ने पसंद नहीं किया। लिहाजा आनंदपुर साहिब प्रस्ताव के जरिये पंजाब धधक उठा। पंजाब में भी जैल सिंह के मुख्यमंत्री दरबारा सिंह से रिश्ते खराब हो चले थे।

इन हालात में अपनी उपयोगिता साबित करने के लिए ज्ञानीजी ने भिंडरवाले से संपर्क किया, जो उस समय दमदमी टकसाल के प्रमुख थे। कट्टर विचारों से लैस कुरीतियों के विरुद्ध उनका रुख सिखों के बड़े वर्ग को प्रभावित कर रहा था। कहा तो यहां तक जाता है कि एक मौके पर उनकी मुलाकात संजय गांधी से भी कराई गई। भिंडरवाले पर हत्या के लिए उकसाने से लेकर राष्ट्रीय विरोधी तकरीर करने के दर्जनों मुकदमे दर्ज थे। इन्हीं दिनों दिल्ली की सड़कों पर खुलेआम शस्त्रों का प्रदर्शन करते हुए वह कानून व्यवस्था के रखवालों को ठेंगा दिखाकर वापस अमृतसर लौट आए। उनकी गिरफ्तारी नहीं हो पाई। ऐसा गृह मंत्री जैल सिंह के प्रभाव के चलते होने की बात कही जाती है। हालात काबू में करने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने जैल सिंह को 1982 में राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित करा दिया। उधर, ज्ञानीजी और भिंडरवाले की मित्रता बढ़ती गई। दूसरी ओर वहां की चुनौतियों से निपटने के लिए पंजाब प्लान तैयार हुआ, जिसकी राष्ट्रपति होते हुए जैल सिंह को भनक तक नहीं होने दी गई। 1984 में अमृतसर के स्वर्ण मंदिर से आतंकवादियों को निकालने के लिए ब्लू स्टार नाम से ऑपरेशन किया गया, जिसमें सेना की मदद ली गई। इसमें पवित्र अकाल तख्त को भी भारी नुकसान पहुंचा। जैल सिंह की जिद के सामने सरकार को झुकना पड़ा, जब उन्होंने स्वर्ण मंदिर का निरीक्षण करने का मन बना लिया। ज्ञानीजी इस घटना के बाद राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करना चाहते थे, लेकिन उनको इसका मौका नहीं दिया गया।

### अष्टयोग-5049

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | | 4 | 5 | | |
| 2 | 30 | 7 | 31 | | 34 | 2 |
| 1 | | | 3 | | 7 | |
| | 28 | 6 | 31 | 6 | 39 | 3 |
| 4 | | 1 | | | 5 | 7 |
| 3 | 30 | | 32 | 7 | 34 | |
| | 5 | | 6 | | 2 | |

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

**अष्टयोग 5048 का हल**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 3 | 6 | 4 | 1 | 7 | 5 |
| 7 | 30 | 2 | 25 | 2 | 34 | 4 |
| 4 | 5 | 1 | 3 | 6 | 7 | 2 |
| 6 | 28 | 5 | 35 | 3 | 39 | 6 |
| 1 | 2 | 4 | 6 | 7 | 5 | 3 |
| 5 | 30 | 3 | 42 | 5 | 34 | 7 |
| 3 | 5 | 7 | 6 | 4 | 2 | 1 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अपना ब्लॉग

### पत्थरबाजी हुई उन्हें बुलडोजर से गिरा दिया

**मोहन।** मध्य प्रदेश के खरगोन में रामनवमी जुलूस के दौरान हुई पत्थरबाजी की तस्वीरों को पूरे देश ने देखा। घटना के अगले ही दिन जिन घरों से ऐसी पत्थरबाजी हुई उन्हें बुलडोजर से गिरा दिया गया। तर्क दिया गया कि ये सारे अवैध निर्माण थे। कुछ लोगों ने सरकार की इस कठोर कार्रवाई का समर्थन किया, तो कुछ ने इस कार्रवाई को कानून सम्मत नहीं माना। मध्य प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा से जब इस बारे में एक टीवी इंटरव्यू में पूछा गया तो उनका जवाब था कि हमने कानून के मुताबिक ही ये किया है। हालांकि वो ये नहीं बता पाए किस कानून के तहत सरकार को ये अधिकार है कि वो बिना अदालत गए खुद ही कार्रवाई कर दे। उल्टा वो ये पूछने लगे कि जिन दंगाइयों ने ये सब किया है आप उनसे पूछें कि उन्होंने ऐसा क्यों किया है। जब एंकर ने उनसे ये पूछा कि आपने कैसे पता लगाया कि कौन गुनहगार है और कौन नहीं? तो उनका जवाब था कि तस्वीरों में सब साफ दिख रहा है!